Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

कबीर और जायसी का रहस्यवाद: तुलनात्मक विवेचन

Dr. Surender Kumar*

M.A. M.Phil (Hindi), M.Ed., M.Phil (Education) Lectruer Hindi at GSSS, Kosli

शोध-आलेख सार: *काव्य की उस मार्सिक भावभिव्यक्ति को रहस्यवाद कहते हैं जिसमें एक भावुक कवि अव्यक्त अगोचर एवं अज्ञात सत्ता के प्रति अपने प्रमोद्गार प्रकट करता हैं। काव्य की इस भावभिव्यक्ति के बारे में विद्वानों के विविध विचार मिलते हैं। जैसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कि जहाँ कवि उस उनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यन्त चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है उसे रहस्यवाद कहते हैं। डॉ. श्याम सुन्दर दास ने लिखा है कि चिन्तन के क्षेत्र का ब्रह्मवाद कविता के क्षेत्र में जाकर कल्पना और भावुकता का आधार पाकर रहस्यवांद का रूप पकड़ता है। महाकवि जयशंकर प्रसाद के अनुसार- 'रहस्यवाद में अपरोक्ष अनुभूति समरसता तथा प्राकृति सौन्दर्य के द्वारा अहं का इदं से समन्वय करने का सुन्दर प्रयत्न है। सुप्रसिद्ध रहस्यवादी कवयित्री महादेव वर्मा ने- अपनी सीमा को असीम तत्त्व में खो देने को रहस्यवाद कहा है। डॉ. रामकुमार वर्मा का विचार है कि रहस्यवाद जीवात्मा की उस अन्तर्हित प्रवृत्ति का प्रकाशन है। जिसमें वह दिव्य और अलौकि शक्ति से अपना शान्त और निश्छल सम्बन्ध जोड़ना चाहती है और यह सम्बन्ध यहाँ तक बढ़ जाता है कि दोनों में कुछ भी अन्तर नहीं रह जाता।"*5

मुख्य-शब्द: *काव्य, भावुक, कवि अव्यक्त, भावभिव्यक्ति, चित्रमयी रहस्यवाद।*

----------X----------

भूमिका:

रहस्यवाद के अंतर्गत एक कवि उस अज्ञात एवं असीम सत्ता से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करता हुआ उसके प्रति अपने ऐसे पे्रमोद्गार व्यक्त करता है जिसमें सुख-दुःख आनन्द-विषाद संयोग-वियोग रूदन-हसा आदि घुले रहते हैं और वह अपनी अन्त होने वाली सत्त को अनन्त सत्ता में विलीन करके एक व्यापक एवं अखण्ड आनन्द का अनुभव किया करता है। कबीर और जायसी के रहस्यवाद के सम्बन्ध में हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वानों के मत एक-दूसरे से भिन्न हैं। कोई कबीर को ही रहस्यवादियों में सर्वक्षेष्ठ मानता है तो कोई जायसी के रहस्यवाद में ही रमणीयता और सौन्दर्य के दर्शन करता हें कोई कबीर के रहस्यावाद को प्रायः नीरस और शुष्क मानता है। निम्नलिखित उद्धाहरणों से वह स्पष्ट हो जायेगा- डॉ॰ श्याम सुन्दर दास के अनुसार- रहस्यवादी कवियों में कबीर का ही आसन सबसे ऊँचा है। शुद्ध रहस्यबाद केवल उन्हीं का है। पे्रमाख्यानक कवियों का रहस्यवाद तो उनके प्रबन्ध के बीच-बीच में बहुत जगह थिगली-सा लगता है और प्रबन्ध से अलग उनका अभिप्राय ही नष्ट हो जाता है।

शोध-प्रविधिः

इस शोध-पत्र के लिए शोध सामग्री अधिकांश रूप में द्वितीयक स्रोतों से ग्रहण की गई हैं। इसमें ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णनात्मक दृष्टिकोण के साथ-साथ शोधकर्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों पत्र-पत्रिकाओं व समाचार पत्रों से प्राप्त की गई हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार- कबीर में जो रहस्यवाद है वह सर्वत्र एक भावुक या कवि का रहस्यवाद नहीं है। हिन्दी के कवियों में यदि कहीं स्मरणीय और सुन्दर रहस्यवाद है तो जायसी में जिनकी भावुक्ता बहुत ही उच्चकोटि की है। वे सूफियों की भक्ति भावना के अनुसार कहीं तो परमात्मा को प्रियतम के रूप में देखकर जगत के नाना रूपों में उस प्रियतम के रूप-माधुर्य की छाया देखते हैं और कहीं सारे प्राकृतिक रूपों और व्यापारों को पुरूष के समागम हेतु प्रकृति के श्रृंगार उत्कंठा या विरह-विकलता के रूप में अनुभव करते हैं।

डॉ॰ चन्द्रवाली पाण्डेय के अनुसार- 'कबीर का रहस्यवाद प्रायः शुषक और नीरस है पर जायसी आदि का ऐसा नहीं।

www.ignited.in

कबीर और जायसी-दोनों ही हिन्दी साहित्य के सुन्दर रहस्यवादी कलाकार हैं। दोनों ने अपनी-अपनी भावना रूपी बधुओं की झाँकी अपने-अपने ढंग पर सँवारी है। वे दोनों बधुएँ रहस्यात्मकता की दृष्टि से समान होते हुए भी आत्मा की दृष्टि से एक-दुसरे से सर्वथा भिन्न हैं।..... कबीर की रहस्यात्मकता भारतीय हठयोग और औपनिषदिक विचारधारा के सुहाग से सम्भूत होने के कारण पूर्ण भारतीय हैं..... यह बात दूसरी है कि उस पर चलते-चलते थोड़ा बहुत प्रभाव सूफी साधना का भी पड़ गया हो। किन्तु उसका सम्पूर्ण सौन्दर्य और निष्ठाएँ ठीक उसी प्रकार की हैं जैसी आदर्श भारतीय बधुओं में पायी जाती है।..... भारतीय सूफी-साधना और भारतीय अद्वैतवाद के संयोग से उत्पन्न उनकी (जायसी की) रहस्य-भावना कुछ बातों में भारतीय और कुछ बातों में अभारतीय है।

तुलनात्मक विवेचन

जायसी और कबीर के रहस्यवाद को पूर्ण रूप से देखने के लिए उनकी प्रकृति को समझना आवश्यक है। सभी रहस्यवादी कवियों के काव्यों में प्रायः वे सात अवस्थाएँ पायी जाती हैं:

1. जिज्ञासा,
2. महत्त्वदर्शन,
3. प्रयत्न,
4. विध्न एवं वेदना,
5. आभास,
6. अपरोक्ष अनुभूति और
7. चिरमिलन।

डॉ॰ रामकुमार वर्मा ने रहस्यवाद की तीन अवस्थाओं का उल्लेख किया है प्रथम-स्थिति में आत्मा परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ने के लिए अगसर होती है द्वितीय-स्थिति में आत्मा परमात्मा से प्रेम करने लगती है और तृतीय-स्थिति में आत्मा और परमात्मा का पूर्ण मिलन अथवा एकीकरण हो जाता है।

अब तक कबीर और जायसी के रहस्यवाद की तुलनात्मक विवेचना करने वाले विद्वानों के केवल नीरसता और माधुर्य की तुलना की है। कुछ विद्वान इस तथाकथित अन्तर का जायसी में प्रकृति के प्रति रूझान और कबीर में प्रकृति की अपेखा को माना है विद्वानों ने जायसी के रहस्यवाद के पाँच प्रकार माने हैं-

1. आध्यात्मिक रहस्यवाद
2. प्रकृति-मूलक रहस्यवाद
3. प्रेम मूलक रहस्यवाद
4. भोतिक रहस्यवाद तथा
5. अभिव्यक्ति मूलक रहस्यवाद

इन रहस्यवादों में से प्रकृति-मूलक रहस्यवाद को नहीं अपनाया है। इसका कारण यह है कि कबीर में जहाँ प्रकृति अपने मिध्यात्व के कारण तिरष्कृत है वहाँ जायसी में वही परमात्मा के झलक का सांधन बन गई है। कबीर में आत्मा और परमात्मा के सौन्दर्य का प्रकाश होने के कारण प्रकृति स्वयं परमात्मा के रूप में प्रतिष्ठिता हो गई है।

जायसी के रहस्यवाद की सबसे बड़ी विशेषता उनकी प्रेम की पीर है। इसी प्रेम-तत्व के कारण उनका रहस्यवाद मधुर से मधुरतम बन गया हैं और इसी कारण उसमें विलास की झाँकिया मिलती हैं। जायसी का रहस्यवाद सर्वत्र समष्टिमूलक के रूप में प्रस्तुत हुआ है। सफीमत और इस्लाम के प्रति पूर्ण आस्था रखने के कारण कहीं-कहीं उनका रहस्यवाद सूफी सिद्धान्तों से पूर्ण रूप से प्रभावित मिलता है। इसके अतिरिक्त समष्टिमूलक दृष्टिकोण होने के कारण उनके रहस्यवाद की अभिव्यक्ति प्रायः अन्योक्ति और समासोक्ति द्वारा हुई है। इसी कारण यह बहुत सांकेतिक और व्यंजनात्मक हो गया है।

रहस्यवादी के लिए आस्तिक होना पहली शर्त है। कबीर पूर्ण आस्तिक हैं। उन्होंने नास्तिकों के शून्य को भी ब्रहम बना दिया है परन्तु उनकी आस्तिकता परम्परा विश्वासों पर आधारित न होकर प्रत्यक्षानुभूति पर आश्रित है- देखा है तो कस कहूँ कहै तो को पतियाय। गूँगे केरी सरकारा खाये और बैठा मुस्काय।।

जायसी भी पूर्ण आस्तिक है लेकिन उनकी आस्तिकता कबीर से भिन्न है। इस्लाम में प्रत्यक्षानुभूति पर विश्वास न कर इसान पर किया जाता है। इस कारण उनमें भावना और कल्पना का प्रधान्य है- निमिख न लाग कर ओहि सबई कीन्ह पल एक/गगन अंतरिख राखा बाज खंभ बिन्दु टेक।।

उपास्य के मामले में दोनों के ही उपास्य सगुण और निर्गुण के सर्मान्वत रूप वाले है। परन्तु जायसी की प्रेम-भावना समष्टिमूलक है, इसलिए वे अपने आराध्य का चिन्तन एक विराट सौन्दर्यमयी सत्ता के रूप में करते हैं। कबीर की

www.ignited.in

भावना व्यष्टिमूलक है इसलिए उसमें उस विराट सौन्दर्य के दर्शन नहीं होते। जायसी उसके सौन्दर्य वर्णन के लिए वाह्य साधनों का खुलकर उपयोग करते हैं, जबकि कबीर में बाह्य साधनों की अपेक्षाकृत न्यूवता है। जायसी पद्मावती के सौन्दर्य में उसी विराट सौन्दर्य का प्रतिरूप देखते हैं- नयन जो देखा कमल भाव निर्मल नीर रसीर।/हँसत जो देख हँस भाव दसन जोति नगहीर।।

कबीर का ब्रह्य सुनि मण्डल बांसी है- कोई ऐसा न मिले सब विधि देहि बताया।/सुनि मण्डल में पुरूष एक ताही रहै ल्यौं लाय।।

दोनों ही तत्व रूप में ब्रह्म के उपासक हैं। दोनों ही शून्यवादी हैं। दोनों के उपस्य सौन्दर्य रूप है किन्तु जायसी की सम्पूर्ण दृष्टि उसी आध्यात्मिक दिव्य सौन्दर्य से आते-प्रोत है। उनका लक्ष्य सौन्दर्य की प्राप्ति है। इसके विपरीत कबीर के पास अपने आराध्य के सौन्दर्य की प्राप्ति है। इसके विपरीत कबीर के पास अपने आराध्य के सौन्दर्य को व्यक्त करने के साधन नहीं हैं। वे उसे केवल प्रकाश-स्वरूप कहकर ही संतोष कर लेते हैं। यदि उन्होनें कहीं प्रयत्न भी किया है तो उसमें जायसी का-सा भावात्मक सरस एवं ग्राह्य सौन्दर्य नहीं आ पाया है।

ब्रह्म की अनुभूति के विषय में दोनों समान विश्वास करते हैं। परन्तु कबीर-औपे आप चिनारिया तब केत होय आनन्द रे। कहकर उसे विचार प्रधान बना देते हैं। जायसी-आप पिछौनें आपै आप कहकर उसे भावना-प्रधान बना देते हैं। जायसी- आप पिछौनें आपै आप कहकर उसे भावना-प्रधान बना देते हैं। इस अनुभूति के लिए कबीर का विश्वास है कि- कुछ करनी कुछ करमगति कछू पूरबला लेख। की सहायता से ही उस आलेख की अनुभूति की जा सकती है। इसके विपरीत जायसी- न जानौ कौन पौन लाई पाया। कहकर केवल आराध्य की कृपा पर ही विश्वास करते हैं।

कबीर और जायसी दोनों ने ही प्रेम रूपी अमृत का पान किया है परन्तु जायसी के प्रेम में मादकता कोमलता और भावुक्ता का प्रधान्य है। उसके अनुसार-प्रेम फाँदे जो परा न छूटा। जिउ जाई पै फाँदे न टूटा। यह प्रेम की अग्नि बड़ी भयानक है जो सारी सृष्टि में व्याप्त है। यह विरही और वह हृदय धन्य है जिसमें यह समा जाती है- मुहम्मद चिनगी प्रेम की सुनि महि गगन डराय।/धनि बिरही और धनि हिया जहै अस अगिनि समाय।

विरह और मिलन के वर्णन में दोनों में कोई मौलिक अन्तर नहीं दिखाई पड़ता। दोनों पर कुछ हद तक सूफी काव्य परम्परा का प्रभाव पड़ा है। दोनों को ही अपने प्रियतम का पता गुरू द्वारा मिलता है। कबीर को यह प्रेमतत्व के रूप में तथा जायसी को विरह-तत्व के रूप में प्राप्त होता है। कबीर को- गुरू ने प्रेम का अंग पढ़ाय दिया रे तथा जायसी को गुरू बिरह चिनड़गी जो मेला। सो सुलगाई लेइ जो चेला।

जायसी का प्रेम रूप-लिप्सा जनित है और कबीर का संस्कार-मूलक। यही कारण है कि सूफियों के प्रेम में अलौकिक भक्ति के साथ-साथ लौकिक रति को भी महत्त्व मिला है। जायसी का सम्पूर्ण काव्य सौन्दर्य और प्रेम की भावना से विभोर है। इस लौकिक सौन्दर्य और रति के कारण ही जायसी के रहस्यवाद में मादकता एवं विकास का पुट अत्यंत गहरा हो गया है।

कबीर में इस प्रकार के वर्णन का अभाव है। जायसी और कबीर के प्रेम में विरह और मिलन के कुछ उद्धाहरण प्रस्तुत हैं-

विरह-

सब रग तंत रबान तन विरह बजावै नित्त/और न कोई सुनि सकै कै साँई के चित्त। रकत ढरा माँसू गरा हाड़ भए सब संख।/ धनि सारस होई ररि मुई आइ समेटहु पंख।

कहा मानसर चहा सो पाई। पारस रूप इहाँ लगि आई।।/भा निरमर तेन्ह पायन परसें। पावा रूप् रूप् के दरसें।।/मलै समीर बास बन आई। भा तीतल गै तपन बुझाई।।/न जनौं कौनु पौन लै आवा। पुन्नि दसा मैं पाप गँवावा।। हरि संगति सीतल भाया मिटी मोह की ताप।/निज बासुरि सुख निधि लहया जब अन्तर प्रगट्या आप।।

आध्यात्मिक अनुभूति

डॉ॰ त्रिगुणायत के अनुसार कुमारी अण्डरहिल नामक अंग्रेज महिला ने इस अनुभूति की पाँच अवस्थाएँ मानी हैं-

1. आत्मा की जाग्रतावस्था- इसमें ब्रह्म-जिज्ञासा उत्पन्न होती है और साधक ज्ञान और वैराग्य की और उन्मुख होने लगता है।

2. आत्मा के परिष्करण की स्थिति-इसमें साधक विविध प्रकार की साधनाओं में लग जाता है।

3. आत्मा की आंशिक अनुभूति की स्थिति-साधक इसमें विविध ध्वनियाँ सुनता है और विविध दृश्य देखता है।

www.ignited.in

4. रहस्यानुभूति के विध्नों की अवस्था-इसमें ईश्वरानुभूति में बाधाएँ पड़ने लगती है।

5. तादात्म्क की स्थिति-यह आत्मा-परमात्मा के साक्षत्कार और तादात्म्य की स्थिति हैं

उपर्युक्त सभी स्थितियों को वर्णन सूफी तो बड़े विस्तार से करते हैं किन्तु कबीर ने उनका वर्णन समान रूप से किया है। पहली स्थिति जो जाग्रतावस्था कहलाती है कबीर और जायसी ने गहरी जिज्ञासा और मिलन के लिए व्याकुलता दिखाई है। जायसी का रत्नसेन जब अपनी प्रियतमा के दिव्य सौन्दर्य की तन्मयता से जागता है। तो सारा संसार उसे नीरस लगने लगता है और उसमें वैराग्य भावना उत्पन्न हो जाती है- जब भा चेत उठा बैरागा(जायसी)

कबीर वैराग्य को महत्त्व नहीं देते। उनके लिए ज्ञान ही सब कुछ है- कबीर जाग्याहि चाहिए क्या घर क्या वैराग(कबीर)

साधना की दूसरी अवस्था में साधक विरह से व्यथित होने के साथ ही आराध्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करने लगता है। कबीर के विरह वर्णन में सूफी और भक्त दोनों पद्धतियों का प्रभाव है। भक्तों से प्रभावित होकर वे "जिन पर गोबिन्द बीछुड़े तिनको कौन हवाल। कहने लगते हैं और सूफियों का अनुसरण करते हुए कहते हैं- अंशड़िया झांई पड़ी पंथ निहारि निहारि।/जीभड़िया छाला पड़या राम पुकारि पुकारि।

जायसी ने कबीर की यौगिक साधना की तरह सूफी-साधना अपनाई है। इसमें अपना कल्ब (हृदय) शुद्ध करके रूह को विकसित करना पड़ता है। इस शुद्धि के लिए साधक को सात मुकामात से होकर गुजरना पड़ता है। साथ ही उसे ईश्वर स्मरण और जप आदि भी करना पड़ता है। ये हालात कहलाते हैं। इस प्रकार साधक शुद्धाचरण आदि की सहायता से अपने शरीर और मन की शुद्धि कर साधना के मार्ग पर आगे बढ़ता है। इस मार्ग पर चार पड़ाव पड़ते है-शरीयत तरीकत हकीकत ओर मारफत। अन्तिम अवस्था हाल अर्थात् भावातिरेक की चरम अवस्था होती है और यहीं आकर रूह फना होकर आराध्य से जा मिलती है।

जायसी में उपर्युक्त सम्पूर्ण अवस्थाओं के चित्रण मिलते हैं। उन्होंने प्रियतमा को प्राप्ति- चार बसेरे सों चढ़ैं, सों उतरे पार, कहकर इसी सूफी साधना पद्धति का पालन किया है। जबकि कबीर ज्ञान वैराग्य और योग द्वारा आत्म परिपकरण कर भक्ति में तन्मय हो साक्षात्कार करना चाहते हैं। इसके लिए उन्होंने स्थान-स्थान पर-जल में कुम्भ कुम्भ में जल है जैसे सिद्धान्त वाक्य कहकर ज्ञान को प्रधानता दी है।

साधना की तीसरी अवस्था में साधक को आराध्य की झलक-सी मिल जाती है। कबीर इस स्थिति का आभास पाकर हर्ष से उन्मत्त हो उठते हैं। यथा- जरा मरण व्यापै नहीं युवा न सुनिये कोय।/चलि कबीर तेहि देसिड़े जहँ वैद विधाता होय।।

इस वर्णन में तीव्रता तो है, मगर सरसता और कोमलता की रमणीयता नहीं आ पाई है। जायसी के ऐसे वर्णनों में पर्याप्त सुरसता और माधुर्य है। प्रियतम की झलक का वर्णन करने के उपरांत जायसी उस लोक का चित्रण करते हैं- जहाँ न राति न दिवस है जहाँ न पौन न पानि।/तेहि बन सुअटा चल बसा कौन मिलावै आनि।

चैथी अवस्था विघ्न की अवस्था है। साधक के मार्ग में अनेक विध्न बाधाएँ उत्पन्न होती हैं। कबीर इन बाधाओं को माया का रूप देते हैं। माया ठगिनी का रूप धारण कर अनेक विघ्न बाधाएँ उत्पन्न करती है। इसी प्रकार जायसी ने भी अपने नायक के मार्ग में पड़ने वाली विविध कठिनाईयों का वर्णन बड़े विस्तार से किया है परन्तु जायसी ने कबीर के समान माया के विभिन्न जालों द्वारा उत्पन्न कठिनाईयों की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया है।

साधक की अंतिम स्थिति मिलन की अवस्था है। मिलन होने पर साधक पूर्ण सिद्धावस्था को प्राप्त हो जाता है। कबीर आराध्य से मिलन मात्र की कल्पना से काँ उठते हैं। जायसी ने मिलने से पूर्व की इस रोमांचित अवस्था का चित्रण ऐसा ही किया है किन्तु उसमें लौकिकता का प्राधान्य है। जायसी के इस वर्णन में रमणीयता है एक अलौकिक आनन्द है। इसकी तुलाना में कबीर का वर्णन शुष्क और नीरस है। इसका कारण यह है कि कबीर उपनिषदों से प्रभावित हैं जबकि जायसी सूफी सौन्दर्यवाद और प्रतिबिम्बवाद से प्रभावित है। पूर्ण मिल नही दोनों साधकों की साधना की पूर्ण स्थिति है। इस स्थिति के परिणाम स्वरूप् कबीर तो पूर्ण रूप से जीवनमुक्त हो जाते हैं और अमर हो जाते हैं- हम न मरे मरिहैं संसार हमकू मिले जियावन हारा।

रहस्यवाद एक आध्यात्मिक अनुभूति का परिणाम है। अतः इसकी अभिव्यक्ति साधारण रूप से नहीं हो सकती। कवीर और जायसी दोनों ने इसकी अभिव्यक्ति अलग अलग ढंग से की है। कबीर ने प्रतीक-पद्धति रूपक पद्धति तथा उलटबाँसियों की सहायता से अपने रहस्यवाद की अभिव्यक्ति की है तो जासी ने अपनी स्वानुभूति की अभिव्यक्ति के लिए प्रेम-कथा का सहारा लेकर उसमें असफल अन्योक्ति और सफल

www.ignited.in

समासोक्ति का प्रयोग किया हैं। साथ ही उन्होंने प्रतीक पद्धति को भी अपनाया है।

अतः कहा जा सकता है कि जायसी और कबीर हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ रहस्यवादी कवि हैं। एक (कबीर) का रहस्यवाद आध्यात्मिक एकान्तिक व्यष्टिमूलक सजीव और वर्णनात्मक है तो दूसरे (जायसी) का सरस संकेतात्मक और समाष्टिमूलक है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ:

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ. 668
2. कबीर-ग्रंथावली (भूमिका) पृ. 56
3. काव्य कला और अन्य निवन्ध पृ. 69
4. महादेवी का विवेचनात्मक गद्य पृ. 132
5. कबीर का रहस्यवाद, पृ. 7
6. डॉ॰ श्याम सुन्दर दासः कबीर ग्रंथावली की भूमिका (पंचम संस्करण) पृ. 751
7. आचार्य रामचन्द्र शुक्लः जायसी ग्रन्थावली की भूमिका पृ. 164
8. डॉ॰ राम कुमार वर्माः कबीर का रहस्यवाद पृ. 12-14
9. राजनाथ शर्मा, कबीर पृ. 125
10. डॉ॰ श्रीनिवास शर्मा जायसी ग्रंथावली पृ. 66
11. वहीं पृ. 120
12. डॉ॰ भगवत स्वरूप मिश्र, साखी-सरोवर पृ. 212
13. डॉ. श्री निवास शर्मा, जायसी ग्रंथावली पृ. 236
14. डॉ. भगवत स्वरूप मिश्र, साखी-सरोवर पृ. 72
15. पदमावत पृ. 359
16. वही पृ. 65
17. डॉ॰ भगवत स्वरूप मिश्र साखी-सरोवर पृ. 91
18. कबीर ग्रन्थावली: पृ. 72
19. वहीं पृ. 132
20. जायसी ग्रन्थावली पृ. 213

Corresponding Author

Dr. Surender Kumar*

M.A. M.Phil (Hindi), M.Ed., M.Phil (Education)
Lectruer Hindi at GSSS, Kosli

surenderkumar.lectruer@gmail.com